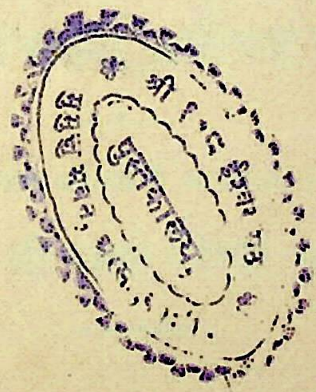
क्र
298
11-18

दो पुस्तक
11-18

क्र
298

SC



॥ ॐ नमो ब्रह्मणे नमः ॥

श्री रामचन्द्र शवरी

सम्वाद



जिसको

श्री १०८ श्री स्वामी नारायण भारती जी

—ने—

सत्पात्रों और सज्जनों के कल्याणार्थ रचा है

हितैषी श्री स्वामी देवेश्वर भारती

प्रकाशकः—

श्री जगदीस प्रशाद गोयिल ब्रान्च

पोस्ट मास्टर कहरोला, जिला बुलन्दशहर।

प्रथमवार १०००	भाद्रपद सुदी त्रयोदशी चन्द्रवार सम्वत २०१० वि०	मूल्य प्रेम

मुद्रकः—श्री गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, चन्दौसी।



गुरू शिष्य

श्री स्वामी नारायण भारती। स्वामी देवेश्वर भारती

श्री गोपाल प्रिन्टिग प्रेस, चन्दौसी।

❀ ॐ ब्रह्मणे नमः ❀

भूमिका

उस सर्व शक्तिमान् परमात्मा को नमस्कार है जिसकी शक्ति से देव, दैत्य, मुनि नर सब जीव, क्रिया करते हैं। अब मैं भगवान श्री रामचन्द्र जी और शवरी के प्रेम की रचना कथना चाहता हूँ। छन्दों और दोहों में वह रचना कैसी है कि जिसको पढ़कर और सुनकर कंठ गद्-गद् होता है। भगवान सदैव अत्यन्त प्रेम के ग्राहक है जो बदर (बेर) शवरी ने चाख २ कर रक्खे थे वो ही बेर श्री रामचन्द्र जी ने लक्ष्मणजी सहित प्रेम-पूर्वक खाये थे उसी प्रेमरूपी अमृत का वर्णन इस पुस्तक में किया गयाहै आशा है कि सज्जन जन इस प्रेम कथा और आनंद रहस्य को सुनकर एवं पढ़कर मेरे परिश्रम को सफल करेंगे। प्रेमी भक्त जनों के लिये यह कथा अत्यन्त महत्व पूर्ण और रोचक है।

श्री स्वामी नारायण भारती कृत

॥ रामचन्द्र शवरी सम्वाद प्रारम्भ ।

❀ छन्द ❀

गणपति महेश शारदा मम कृपा दृष्टि से देखहीं ।
कथना चाहूं चरित्र हरि के करो उर में निज गेहहीं ॥
सुमिरण करूं लक्ष्मी पतिका जे जन काज़ धरि देहहीं।
उन्ही का भरोसा मोहि है,दास पर करें नेहहीं १ ॥
द्रोपद सुता की लाज राखी जगत में भई कीरती ।
दुर्योधन के मान मारे उस को न काऊ धीर दी ॥
खम्भ फारो दुष्ट मारो हरिभक्त को निज शरण दी ।
आनन्द मन प्रह्लादजी प्रभु जन को वहुत धीर दी॥२॥
सैन भक्त का भय टारो प्रभु आप पाद दवा वहीं ।
निर्भयकियानिजभक्तको कवि कोविदा कीरति गावहीं ॥
गज ग्राह लड़े जलके अन्दर वहुतिक दुन्ध मचा वहीं ।
हरि टेरे गज राज ने बैकुंठ छोड़ हरि धावहीं ॥ ३ ॥
ग्राह मारो गज को उभारो गज राज ने स्तुति करी ।
दुष्ट घालक संत पालक आपहो एक ओम हरी ॥
गति देइ ग्रध्द निज धाम पठाए हरि ने करूणा करी ।
कष्ट हरा जाय भक्त का बिपता हरिने आप हरी ॥४॥
पुनिशवरी ग्रह धाए शवरी प्रेम लिपट चरण पड़ी ।
आए हरि निज धाम में आज यह है शुभ धन्य घड़ी ॥
सुन्दर जल पद पखारे शवरी देखें हरि को खड़ी ।
पद गहि हरिको वैठारती उरमें हरि की भक्ति भरी॥५ ॥

॥ दोहा ॥

कर जोड़े सम्मुख खड़ी बहै नेत्र जल धार।
आज बड़े मम भाग्य हैं हरि आये निज द्वार ॥

छन्द

रूप देख कर छक गई कुछ सुधि बुधि ना तन की रही।
जिमि धनखान लहि रंकने न कुछ चिन्ता धनकी रही॥
सुन्दर उदर राम का नाभी भमर शोभा हरि रही।
शवरी देख रूप को बहु आनन्द मन में भरी रही ॥६॥
सीस जटों के मुकुट सुहाए स्वेद बिंद मस्तक घने।
कुण्डल शोभा नहिंकहि जाय अदभुत हरिके कारण वने॥
करि सुण्ड समभुजा बिराजे जिनसे दैत घने हने।
आनन कोटि मदन लजाबें सुन्दर हैं दोऊ जने ॥७॥
विंवफल सम अधर अरुण हैं दशनन कि शोभा है घनी।
कपोल हैं आमला समजनु बक्रभ्रकुटि कमानी वनी॥
सिंह कन्ध आयत विशाला शवरी देख पाई मनी।
हरि कन्ठ ने शोभा हरि संख की ऐसे राम धनी ॥८॥
प्रलम्व भुजबल हैं हरि के पुनि धनुष की शोभा नई।
जब हरि शर साजो धनुष पर जनु दामिनी दमक गई॥
शवरी राम रूप पुनि २ लखे बहु भक्त उर में रही।
तनशीतल होगया आंखजल कीझड़ी बहुझड़ रही ॥६॥
फल फूलले आगे धरे कुछ और न वन में हरे।
शवरी प्रेम लपेटे वचन कहे रोम हो गए खड़े॥
अनुज मिल राम खाए जो चाखे बेर शवरी धरे।
हरि वार२ बखान करें तेरे फल हैं रस भरे ॥१०॥

दोहा २

राम कहैं शवरी सुनो कहूँ भजन की बात।
ऐसे सुख तव न पाये सुख सीता निज हाथ॥

छन्द

जनक पुर में रानी उन के रचे पाक हम पावहीं।
जो सुख फल में आया बैसे स्वाद वहाँ न आवहीं॥
जव कृष्णरूप धरा हमने रूकमणि पाक वना ग्रहीं।
जो स्वाद तव फलमें मिला बैसे वहां ना आवहीं॥११॥
वाल समय माता यसोदा माखन मिश्री निजकर दिए।
बैसो रस वहां नहीं पाए जैसे आज फल दिये॥
मथुरा में माता देवकी मधुर मीठे निज कर दिये।
वैसे स्वाद वहाँ नही पाये हुये अव सुखी हिए १२॥

॥ स्वामी नारायणभारती कृत॥

निज जननी मात कौशिल्या कमल से कर भोजन करे।
जो रस तव फल में पायो बैसे वहां नहि मन भरे॥
षोडष सहस्त्र रानी भवन वहु बार हम त्रिपनी करे।
रस वहांभी नहि पायो क्याआज यहफल अमृत भरे॥१३॥
वहु स्वाद विदुर घर पाए साग वने बिन लवण परे।
भई आनन्द विदुर पतिनी तव सुन्दर भोजन करे॥
जव वहु बडाई हरिने करी तव मन में सकुच करे।
सब अंग शीतल होगए वहु विधि मन में धीर धरे॥१४॥
विधिकम जाति नारी रची तिन में नीच में अघभरी।
पूजा कछु न जानू किस बिधि कैसे पूजूं हे हरी॥

निशिदिन ममतमभररहिहरि किसविधिगतिको पाऊंगी।
वह दिवस कब होगा तुम धाम को जब मैं जाऊंगी॥१५॥

दोहा ३

चौरासी लख भ्रमण कर नहिं पाये हम राम।
आए हरि निज धाम में मम पूर्ण हैं काम॥

छन्द

में बड़भागी हरि पद लागी, सब दुख की गति होगई।
कुछ सुधि बुधि मोहि न रही, अज्ञान निद्रा में सोगई॥
माया बस जीव दुखारी मेरी, सब सुधि विसर गई।
भजन प्रभु का नहीं किया, अज्ञान में वहुवृति होगई॥१६॥
रस भरी वाणी हरि कहि, मम सत्य वचन सुनि भामिनी।
तुमप्रियममहो प्राण समजिमिचकोरप्रियशशियामिनी॥
जन के हृदय बसे चाहे, पुरुष हो चाहे कामिनी।
जन मेरा हृदय बसे चाहे, नीच बामन बामिनी॥१७॥
जब २ हानि धर्म की होई असुरों की अनि बढ़ रही।
जब द्विजसन्तदुख पावहिं, तब अधिक भार महिभरि रही॥
मम युग२ अवतार धरे, धरम की उपमा बढ़ रही।
श्रुति सेतु पालन सदा करूं घर२ सम्पति भर रही॥१८॥
कहें हर भक्ति वेद ने गाई, चित में धर लीजिए।
विषय विष को त्याग भामिनी, भक्ति रस नित्य पीजिये॥
प्रथम भक्ति सुनि शवरी, वासना तज उर धरि लीजिये।
सदा संग सन्तों का भावे, हरि ध्यान में लीजिये॥१९॥
सन्त वर्णन नहीं हो सके, संत हैं शुद्ध निरंजनम।
हैं वह एक रस सदा, नहिं ब्याधि रोग नहिं मरन जनम॥
इन्द्रियांद मन कर मन को मारे न कुछ करने है गम्म।
जो चिदा काश है सदा सोई सदा रहते हैं हम्म॥२०॥

॥ स्वामी नारायण भारती कृत ॥

दोहा:—प्रथम कि भक्ति वर्णन करी भामनी धरो ध्यान ।
सन्तों की उमपा करी जिन से होता ज्ञान ॥

छन्द

उभय भक्ति तव जान जबमम चरण प्रीति बहुलग रही ।
सन्तों का संग होय भ्रम शोक चिन्ता ना जब रही ॥
ध्यान रहै मम चरणमें इच्छा ज्ञान निधिमें वह रही ।
जब उरमें मम वास हुआ तब कामना सब छुप रही॥२१॥
युग भक्ति यह है शवरी सन्तों के उर में भासती ।
उमासहित शिव उर धरें जिन को तू मनमें गावती ॥
तृतीय भक्ति अव सुनों शवरी गुरू कृपा से आवती ।
गुरू जन पर प्रसन्न रहैं वह शुद्ध मनमें भासती २२॥
मान रहित भक्तिकरे अपमान का दुखनहि चितधरे ।
ध्यान हरि पदमें धरे मम गुण गान छण २ में करे ॥
भक्ति करे भगवान की वह घोर नरक में नहीं परे ।
अनन्त गुण हरि के भजे वह बारम्बारा नहीं मरे २३॥
पर त्रिया जननी सम जाने परधन विष सम हो गया ।
ममता का जब त्याग किया इस जगत से वह सो गया ॥
पंचम भक्ति जो करताहै वह सुख का बीज बोगया ।
जो नहीं हरिको भजताहै वह इस जगत में रोगया॥२४॥
भक्ति महिमा सुरशेष वखानी शिव उरशार भर रही ।
ऋषि मुनि सिद्ध धरें मनमाही अमृत वाणी तुमसे कही ॥
षटभक्ति वर्णन करूं जो भक्तों के चित में भर रही ।
सेवक को शुद्ध करे पुनि इन्द्रियों का वल हरि रही॥२५॥

फ
३४७

दोहा:—छटी भति वर्णन करी सुनी मन में धरि धीर।
जब रस भरी वाणी म कहैं राम गम्भीर ॥

छन्द

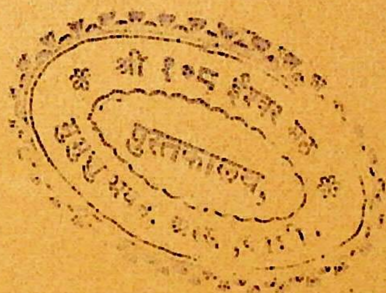
सातमी भक्ति हम कहैं सब अब शवरी सुन तो सही।
काग भुशुण्ड गरुण ने पाई जो शिव के उर में रही॥
बैराग हृदय में धरे सब जग को मुझ में देखही।
मुझसे श्रेष्ठ सन्त पूजा सत्य वाणी तुझ से कही॥२६॥
अष्टम भक्ति जन उर में धरे इष्ट अनिष्ट सम रहै।
निर्मल भक्ति धरे चितमें पर के दोष कुछ नहीं कहै॥
क्षण२ श्रुति निज अघकीं करै दुष्ट शब्द से सम रहै।
माया ममता जब दूर हुई भक्ति सुख कैसे कहै॥२७॥
नवम भक्ति जब जन करे जगत वासना सब तज दई।
फन्द कटे सब आशा के तृविधि इच्छा सब भज गई॥
फिर रघुकुल भूषण कहैं तू मोह भमर में फस गई।
राम कहैं शवरी तुम ममप्रिय तू आनन्द होगई॥२८॥
अब स्वभाव मम पुनि२ कहूँ सरल रहै छल नहिं करे।
निसिदिन आस करें मेरी अन्य अधीनता जनि धरे॥
नव भक्ति मम कही जिन के एकउ नव में उर भरी।
सब रस जगतके त्यागें सुमिरण करताहै हर घड़ी॥२९॥
नर नाग देवता चाहे नर हो चाहें हो जड़ नारी।
जिनको समान है मित्र शत्रु दुख सुख प्रसंशा औगारी॥
लोभी तजें धन को कामी तजे बरू सुन्दर नारी।
ममनहीं तजू निज भक्तको यहप्रतिज्ञा है हमारी॥३०॥

दोहा:—जो जन मम सुमरण करें उस उर मैं मम बास।
शिव उसकी उपमा करें जिन का घर कैलाश ।।

❀ छन्द ❀

कोई प्रथम भक्ति में है कोइ उभय को भज रहा।
कोई तृतीय को सिद्ध करताहै यह तुझसे डर कहा ।।
कोई चतुर्थ भक्ति को करता है पंचम भर रहा।
कोई षट सातमी भक्ति करता है खुश मनमें अहा।।३१।।
तव मन में भक्ति बसें तेरे गुण देव भी गावते।
वह भक्ति आज प्राप्त है तुम को जिस से अघ भाजते ।।
भक्ति को मुनी रिषि याचें तिन में भी कोई पावते।
भक्ति की उपमागाड़ी है शिवशेष सुरमें गाबते ।।३२।।
भक्ति दुर्लभ है आज बहुत काल में तब पाई है।
अनन्त जन्म भ्रमण किया भाग की बड़ी बड़ाई है ।।
मम दर्शन करके शवरी चित में शान्ति आई है।
अब हमारी करूणाहै तुझपर अब क्यों घवड़ाई है।।३३।।
सुधिजन कीलेता हूं यदि हेतु असुरों से हम लड़ें।
जिन भक्ति मेरी नहीं कीनीं नरक में वह जापड़ें ।।
भक्त सम मम प्रिय नहीं चाहे हो सुर राज से बड़े।
बहुविधि मम सुन्दर देह धरें वरुबहु मन्त्रि आगे खड़े।।३४।।
धन्य शबरी जो रजनी दिवस मम चरण निहार रही।
जो यश तेरा हृदय धरे उस जन की बड़ाई कही ।।
शबरी भक्ति कथन करी जो भक्तों के उर में भर रही।
नारायण भारती नाम मेरा सन्त पद रूचि रही ।।३५।।

दोहा:—सन्तों की बुद्ध अपार जिन का नहीं कही पार।
सन्तों के कारण धरे राम कृष्ण अवतार ।। समाप्त

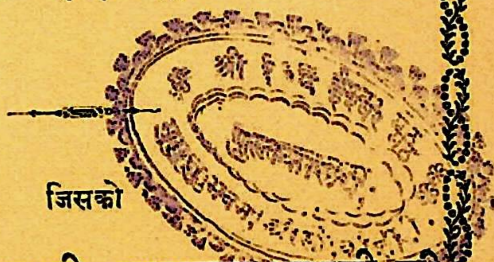

पुस्तकालय




❋ ॐ नमो ब्रह्मणे नमः ❋

कथा राजा अम्बा आमली

❋ की ❋



जिसको

श्री १०८ श्री स्वामी नारायण भारती जी

—ने—

सत्पात्रों और सज्जनों के कल्याणार्थ रचा है

हितैषी श्री स्वामी देवेश्वर भारती

प्रकाशकः—

केशवदेव शर्मा बांकनेर निवासी

जिला अलीगढ़

प्रथमवार १०००	भाद्रपद सुदी त्रयोदशी चन्द्रवार सम्वत २०१० वि०	मूल्य प्रेम

मुद्रकः—श्री गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, चन्दौसी।





गुरू
श्री स्वामी नारायण भारती ।

शिष्य
स्वामी देवेश्वर भारती

श्री गोपाल प्रिन्टिंग प्रेस, चन्दौसी ।

❀ ॐ तत्सत् ❀

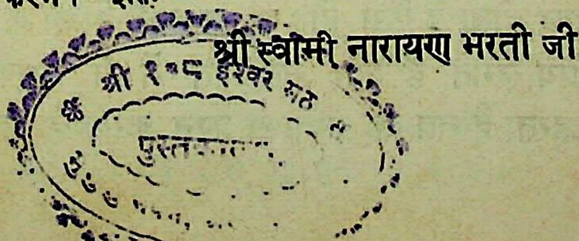
॥ भूमिका ॥

उस परमात्मा को नमस्कार है जो सर्व में व्यापक है और अखण्ड है। इस जी को, जब तक जीता रहै तब तक परमात्मा का भजन करना चाहिये। यह जो बहुत से जीव आठों पहर तृष्णा में ही र ते हैं वह अपना जन्म व्यर्थ ही खोते हैं क्योंकि जीते जी तो चिन्ता से दुःख पाते हैं परन्तु मृत्यु के अनन्तर नरक में पड़ते हैं।

शास्त्र, ग्रन्थ, पुराण और सज्जन सन्त बहुत उपदेश भी करते हैं परन्तु फिर तौ भी तृष्णा और पाप ही करते हैं अर्थात् शुभ कर्मों में नही प्रवर्त्तते। कुछ पुरूष ऐसे हैं जो कामना मन में रख कर शुभ कर्म करते हैं वह कामना रूपी वस्तु का फल पाकर खाली रह जाते हैं। इस कारण से निष्काम कर्म करने चाहियें बहुत से मनुष्य इस प्रकार के हैं कि वह भक्ति की इच्छा तो करते हैं परन्तु उनसे कपट नहीं छूटता है और कपट त्यागे बिना भक्ति का पाना कठिन है इस से जीव को कपट नहीं करना चाहिये। छल,कपट वाला मनुष्य भक्त नहीं हो सकता।

यह जो पुस्तक कथन की है इसमें राजा अम्बा और रानी आमली एवं सरवन नीर की कथा है आशा करता हूं कि इस कथन में मुझ सेवक से जो शब्द इत्यादि की अशुद्धी अज्ञानता से होगई हो तो विद्वान सज्जन तथा भक्त प्रेमी जनों से प्रार्थना है कि क्षमा प्रदान करते हुये इसके भावों पर विचार करके कृतार्थ करेंगे।—इतिः—

श्री स्वामी नारायण भरती जी



❀ ॐतत्सत ❀

शुभ उपदेश कथा राजा अम्बा आंमली की प्रारम्भ

जिससे यह सर्व है जो यह सर्व है और जो सर्व में नित्य है उस परमात्मा को मेरा कोटिवार नमस्कार है अब कुछ दुखी जीवों के विषय में लिखा जाता है इस जीव को सदा धर्म में चलना चाहिये जिस से फिर दुख न हो ।

दोहा

धन देके तन राखिये, तन दे रखिये लाज
धन दे तन दे लाज दे, एक धर्म के काज १

इस दोहे के अनुसार धर्म सब से बड़ा है यह सिद्ध हुआ शंका–आप तो यह कहते हैं कि धर्म सब से बड़ा है तो फिर मोक्ष को सब से बड़ा क्यों कहा है क्यों कि श्रुति (वेद) शास्त्र पुराण ऋषि मुनि और देवता सबही मोक्ष को बड़ा कहते हैं सो इस में क्या युक्ति है। उत्तरः––जब मनुष्य धर्म में प्रवर्त्तता है तब शुभ कर्म करता है निष्काम शुभ कर्म से अन्तः करण शुद्ध होता है ऐसा होने पर उस को सन्तों के वचन प्रिय लगते हैं और सत्संगति में भी उसका मन ठहरता है तब वह सन्तों से प्रश्न करता है भगवान

मुक्ति किस प्रकार होती है ऐसा प्रश्न करने से सन्त उसको आत्मज्ञान का उपदेश करते हैं तब मुक्ति के योग्य होता है ॥ प्रथम जो धर्म कारण हुआ इस से यह सिद्ध हुआ कि धर्म ही बड़ा है ॥ इससे मनुष्य को धर्म ही पर चलना चाहिये ॥ सदा धर्म कीं ही जय होती है ॥ तुमने जो प्रश्न किया था कि धर्म कैसे बड़ा है वह शंका तुम्हारी निवारण होगई ॥ अब धर्म के विषय में और भी प्रमाण देते हैं। यथाः—

दोहा

धर्म काज हरिश्चन्द्र ने, दीन्हा राज गमाय।
कई बार संकट सहे, बिके नीच घर जाय॥

॥ चौपाई ॥

पतीव्रता मदना वतिनारी, हरिशचन्द्र नृपअधिक पियारी
बिकी आप वैश्या गृह जाई, धर्म काज सब लाज गमाई

देखो ऐसे २ प्रमाणों से धर्म कीही जय सिद्ध होती है। तीनों लोकों में धर्म रूप पदार्थबड़ा है यह विश्वास करो और २ भी धर्म की उपमा वर्णन करते हैं। आप सज्जन लोग अच्छे ध्यान से श्रवण कीजिये (सुनिये) एक राजा वड़ा धर्मात्मा अम्बा हुआ है जिसकी रानी धर्म वती आँमलीं थी ।

दोहा

उभय तनय प्रिय प्राण सम, थेवे सरबन नीर।
धर्म त्याग जिन नहिं किया, वहु दुख पड़े शरीर॥

। चौपाई ।

धर्म हेतु रानी नृप अम्बा, दिये राज्य नहिं करी विलम्बा
राज भवन त्यागे छिन माहीं, धर्म काज मन संका नाहीं
महा विपति सहि राजा रानी, धर्मारूढ़ हुए युग प्रानी
सराय रहेजा चार प्रानी, छली गई भूपति की रानी
त्याग सराय नृप आगे धाए, सरबन नीर सुत संग आए
पहुंच गये जब नदी किनारे, महिपति सोच करें हैं ठारे
सोचें नदी थाह ममपाऊँ, तब ही तनय पारले जाऊँ
थाह पाय सुत पार उतारे, तवहिं राउ वह गये विचारे
राजा बहे जात जल माहीं, धर्म हेतु सुधितन की नाहीं
तट के वृक्ष अवलम्बन कीने, तबही राउभूमि पग दींने

दोहा

राजकिया बहु काल तक, इक नगरी आधार
गया राज पुनि पा लिया, महिमा धर्म अपार

॥ चौपाई ॥

राज निकटइक सिन्धु अपारा, पोत किया सौदागर ठारा ।
पोतहिं रही आंमली रानी, जिनसुत मुखसे सुनींकहानी ॥
राजाभी जब शीघ्र सिधारे, कुटुम देखनिज हुए सुखारे ।
मिले परस्पर चारों प्राणी गद् २ कण्ठ न निकले वाणी ॥
मिलेराज सुत मिल गईरानी, धर्महिं जय बोलो सबप्रानी ।
धर्म करै सोकभी न हारा, धर्म पदारथ है संसारा ॥

सज्जन जन श्रोता इन चौपाइयों का अर्थ आप लोगभले

भाँति नहीं समझे होंगे अतः अब हम प्रकट करके लिखते हैं जिससे आप लोग अर्थ को जान जायेंगे ॥ जो चौपाई ऊपर लिख आये हैं। उन्हीं का अर्थ यह दृष्टान्त है। इस मही पर एक राजा अम्बा नाम का अति धर्मात्मा होगया है मानों द्वितीय हरिश्चंद्र था। उसकी रानी आंमली पतिव्रता धर्मवती एवं सुन्दर थी उस राजा के दो पुत्र सरवन और नीर थे एक समय की बात है विष्णु भगवान राजा के धर्म की परीक्षा लेने आये विष्णुभगवान ने सन्यासी बन कर राजा से सम्पूर्ण राज्य मांग लिया। राजा रानी नेभी धर्म हेतु विष्णु भगवान को सम्पूर्ण राज्य अर्पण कर दिया [देदिया] तब राजा रानी ने दोनों पुत्रों को लेकर विदेश को पयान किया। अन्त में यह चारों प्राणी एक सराय में जा पहुँचे और भटियारी से निवास के हेतु स्थान मांगा भटियारी ने कहा चार पैसे दो तव राजा ने कहा माई हमारे पास एक पैसा भी नहीं है तब भटियारी बोली सराय से बाहर हो जाओ। यह सुन कर राजा रानी शोकातुर होगये, और बालकों की ओर देख कर रोने लगे

तब भटियारी ने कहा सराय में रहने की तुम को मैं युक्ति बताती हूं सो सुनो राजा से कहा तुम दो पोट [गठरी] सूखे पत्ते प्रतिदिन बटोर कर लाया करो और तुम्हारी यह स्त्री तन्दूर झौंकती रहा करे

जब तुम ऐसा करोगे तब तुम को मै गुजारे लायक पैसे देदिया करुंगी जब भटियारी ने ऐसा कहा तब राजा रानी उस सराय में रहने लगे, औरधर्म के कारण विपता सहने लगे राजा अम्बा प्रतिदिन दो गठरी वृक्षों के सूखे पत्ते लाया करते थे कहीं २ पत्ते बटोरते हुए राजा को लोग गालियां भी दिया करते थे। परन्तु धर्म में तत्पर राजा अम्बा गालियां सहन किया करते थे और रानी दिन भर तन्दूर झोंका करती थी इस प्रकार बहुत काल के उपरान्त एक सौदागर सराय में आगया जिस का जहाज समुन्द्र के किनारे खडा था उस सौदागर की दृष्टि रानी सुंदरी आंमली के ऊपर पड़गई वह सौदागर रानी आंमली पर मोहित हो गया क्योंकि उस रानी के धर्म केतेज से रुप अधिक सुन्दर था तब सौदागर नेभटियारीं से कहा इस स्त्री को किसी प्रकार मेरे साथ कर दे यदि तू यह काम करेगी तो मेरे हाथों दिया बहुत धन पावेगी प्रथम तो उस भटियारी ने यह बात स्वीकार नहीं की परन्तु जब सौदागर ने भटियारी को वहुत धन दिया तब उस भटियारीं ने वह वात स्वीकार कर ली और सौदागर से कहा तुमसमुन्द्र तट पर जाओ मै इस स्त्री को किसी भी वहाने से जहाज पर लाती हूँ परन्तु जिस समय इस स्त्री को मैं जहाजपर चढ़ा दूं तव तुम अपने जहाज के लंगर खोल देना और इस स्त्री को अपने जहाज में लेजाना। इस प्रकार भटियारी ने सौदागर को जहाज के निकट भेज दिया।

कुछ ही देर के उपरान्त रानी आंमली से भटियारी

कहने लगी कि तू यहां पर बन्द मकान में गर्मी में पड़ी रहती है आज मेरे साथ चल। मैं बाहर जंगल की हवा तुझे खिलालाऊँ क्योंकि पसीने से तू सराबोर हो रही है तब रानी ने कहा कि माई मै कहीं नही जाती हूं भटियारी कहने लगी जो तू मेरा कहना नही मानेगी तो मैं चारों को सराय से बाहर कर दूँगी तब रानी ने बिचार किया यदि भटियारी ने सराय से बाहर निकाल दिया तो हम और हमारे पति छोटे २ बालकों को कहाँ लिये फिरेंगे कहीं ज़ंगल आवेगा कही ग्राम कही बन आवेगा तो कहीं प्राण घातक जानबर मिलेंगे हमइन बालकों कीं रक्षा किस प्रकार कर सकेंगे अतः इससमय भटियारी का कहना मानना ही उचित है ऐसे यह अनुमान करके वह रानी उस छल भरी भटियारी के साथ होली और एक चादर ओढ़कर उस भटियारी के पैर निहारतीं हुई चली गई जब समुन्द्र के किनारे पहुँची तब भटियारी ने कहा कि देख यह समुन्द्र है जिस में अथाह जल है और यह जहाज है जिसमें माल भरा हुआ है। ऐसे रानी से कह कर भटियारीजहाज पर चढ़ गई रानी आंमलीं से कहा तू भी जहाज पर आजा और दूर तक समुन्द्र के जलको देख रानी ने कहा माता मैं जहाजपर नही चढ़ती हू तब उस दुष्टा ने रानी को हाथ पकड़कर जहाज पर खींच लिया और खीच कर बीच जहाज़ में लेगई आप तो शीघ्र दौडकर जहाज से कूद गई और सौदागर को संकेत किया कि लंगर खोल दो तब सौदागर ने भी लंगर तुरन्त खोल दिया। थोड़ी

ही विलम्ब में जहाज समुन्द्र तट से दूर पहुंच गया देखो अम्बा आमली राजा रानी ने धर्म के कारण अनेक कष्ट सहे है इस प्रकार धर्मात्म लोगो कष्ट सहन करके भी धर्म की सदैव रक्षा करते रहो अब रानी का रूधन और विलाप सुनों।

॥ कवित्त ॥

निज पति छुटे युग पुत्र छुटे और सनेही लोक छुटे आज हमारी कौन गति होई।
तात छुटे पुनि भ्रात छुटे लोक कुटुम्बी जात छुटे महाविपति लखि रानी रोई॥
भवन छुटे मणि रत्न छुटे हीरा मोती अधिक छुटे किमि धीर धरु अपना नहि कोई।
गई संपति धीर नही दुष्ट सौदागर दृष्टि पड़े मम धर्म की रक्षा किस बिधि होई॥१॥

॥ कवित्त ॥

हरि चरण गहैं सति नार कहै अँखियन से जल धार वहै हरि दीन वन्धू हो रघुराई।
दुख हरो प्रभु कृपा करो मम धर्म दान प्रदान करो शरण में आज आप की आई॥
तुम निज भक्तों की सुधि लेते भक्त जगत में हैं जेते तुमरी महिमा वेदों ने गाई।
गज और ग्राह लडे प्रभू धाए गज को दिया छुड़ाई तुमरी यह कृपा निजमन भाई॥२॥

। चौपाई ।

देख विपत रानी घवराई। जिमि मलेच्छ गृह गौ रम्भाई॥

दोहा-- वड़ी भीर मुझ पर पड़ी कैसे बांधू धीर।
दशों दिशा तम छा गया कम्पै सर्बाङ्ग शरीर॥

देखो पूर्व धर्मात्माओं ने धर्म के हेतु कैसे २ कष्ट सहे हैं। सौदागर के मोहित और कामातुर होने पर रानी का घवराना और सौदागर को समझाना।

दोहा

अस्त सूर्य होने लगे, अब आई तम रात
वह सौदागर दुष्ट जन, कह रानी से बात

। चौपाई ।

नारी वन जाओ तुम प्यारी, यहयुक्ती हम नीक विचारी।
दुख नहिं होसुख होगा भारी कई लाककी खेप हमारी॥

कवित्त

हमारा जोधन सभी तुम्हें मत तजौ हम तुम्हें नमैंमतहोय दुखारी। आज तुममम प्रीति करोजग रीति करौ मन चीति धरो यह इच्छा हुई आज हमारी॥ जो मम वचन को नहीं मानोगी हठ अपनी को नहीं तजेगी तबही होगी ख्वारी। जोमम तनसे प्रिय प्रेम करोगी तबमैं तजूँ सब जगत की बड़ी जो सुन्दर नारी॥३॥

(रानी का समझाना)

कवित्त

दुष्टतू आंख खोल मत बोलै वोल जायगी धरा डोल पाप भरा तेरे मन माहीं। पापी हुये जगतमें सब ख्वार हुये अनीति आज करै तो कुष्ट बढ़े तेरे तन माहीं॥ कोई भजन करे कोई पाप करै कोई धर्म करै कोई नरक पड़ैगा जग माहीं। पाप करे नहीं हरि से डरे जो पति वृता धर्म डिगावे घोर नरक हो तेरे ताहीं॥ ४॥

कवित्त

मैं पति बृता नार क्यों बकै गवाँर मत रहै अगार मैंनिज धर्म को नहीं तजूँगी कहै नार क्यों धरै भार, करैरार ममतन को हाथ लगावै सिन्धु में डूब मरूगी। आजनहीं कोईमेरे निकट मुझ पर पड़ी है बिपत मैं अब दुख को कहा कहूँगी। मेरे खोटे भाग मम तन में लागी है शोक आग मैं निज दुख की आपहिं सहूँगी॥५

दोहा

आनहिं बारह बरस की, मत कह खोटे बैन।
बारह बरस बीतें तक, तू भइया मै भैन॥ ५

॥ चौपाई ॥

द्वादश बरस रहैं हम ऐसे, तुम जो कहा होइगा तैसे।
बारह बरस होंय जब प्यारी, तब बनियों तुम नारि हमारी ॥

जो मनुष्य धर्म में प्रीति करते हैं वे इस रानी आंमली का वर्णन सुनकर अवश्य ही धर्म का पालन करैं रानी का सम्पूर्ण वर्णन हमने लिखा है अब सराय की और राजा की एवं राजा के सरबन और नीर दोनों पुत्रों की कथा सुनो।

जब राजा पत्तों की गठरी [पोट] लाये तब सराय में उन्होंने देखा कि हमारी सत्पत्नी रानी नहीं दृष्टि आती परन्तु सरबन, नीर दोनों बालक रो रहे हैं। तब राजा ने पूछा बेटा तुम्हारी माता कहाँ है। यहां तो कहीं भी नजर नहीं पड़ती। इतनी सुनकर सरबन और नीर दोनों रो पड़े और कहने लगे। पिताजी हमारी माता को न मालूम कहां को भटियारी लिबा गई थी। सो आपतो आगई और हमारी माता को न जाने कहां छोड़ आई है। सो हे पिताजी हम माता के वियोग से दुखी हैं। इस बात को सुनकर राजा शोक समुद्र में डूब गये और भटि-यारी से पूछने लगे। माई हमारी भार्या को तुम कहां छोड़ आईं। तब भटियारी ने बहुत गालियां दीं और कहा हम अपने काम में लगे रहते हैं क्या हम

तेरीं स्त्री को रखाते हैं। यहां बहुत से अनेक प्रकार के पुरुष आते हैं और बड़े २ सुन्दर भी आते हैं। किसी सुन्दर पुरुष के साथ भाग गई होगी हम तेरी स्त्री को नही जानते कहा गई अब तुम मेरी सराय खाली करदो और सराय के बाहर होजाओ जब ऐसा भटियारी ने कहा तब राजा और सर बन नीर पिता पुत्रों तीनों प्राणी सराय छोड़कर चलदिये कुछ दिनों तक दोनों पुत्र और राजा चलते रहें मार्ग में एक नदी आई बहां तीनों प्राणी खड़े होगये उस समय नदीं के किनारे कोई भी मनुष्य नही था जिससे कि नदी से उतरने का घाट पूँछें।

कवित्त

खड़े नदी के तीर, जहां बहै नीर, बँधै नहिं धीर, सरि नीर की नहीं सुमारी है डरै नृप करै सोच, ममभाग पोच नहिं हमें होस यहा नहिं पुरुष नहीं नारी है नदी बीच गये पटभीज गये तट पहुच गये, सोच रहें सरि बीच बहुत अब बारी है, एक सुत कन्धु धरूँ, पुनि नदि वरूँ, तटजाय धरूं, मेरे मन में सोच अब भारी है ॥ ६ ॥

कवित्त

हमारा राज छुटा, परिवार छुटा, घरवार छुटा, तुमने त्रिधात अब क्या ठानी है। बहु दुख सहे, सब सुख गये, दूर त्रिदेशों आइ गये, न जाने कहां हमारी रानो है। नहीं कोई यतन वनं नृप शीश धुने अब किससे कहूँ जो आज दिन विपति कहानी है

घर से चले प्राणी चार सुत सुन्दर नारि पड़ा हम पर विपतिभार कोप शंकर भवानी है ॥ ७ ॥

दोहा

इक सुत छोड़ा वार पर, दूसर किया है पार ।
जब राजा सरि पग धरा, तब आई जल वार ॥

हे सज्जनों राजा रानी ने तथा सरबन और नीर ने जो कुछ भी क्लेश सहें हैं वह धर्म के कारण सहें है। इस से यह सिद्ध हुआ कि त्रिलोकी [तीनों लोकों] में धर्म ही सार हैं।

कवित्त

जो धर्म करै, सबदुख हरै नरक में वह नही जरै, यही कारण धर्म बड़ाई है । नर नारी दैत्य सन्त सती यती कोविद कविता सब ने धर्म की उपमा गाई है जिन धर्म करा वोही बड़ा वोही काल से जाय लड़ा धर्म की महिमा गाई है। जिन जग में धर्म नही कीन। पुनि वोही नरक में जाय पड़ा उसी ही की नरक बड़ाई है ॥ ८ ॥

दोहा

किया धर्म बर्णन, बहुत धर्म करो नर नार ।
धर्म भरोसा सदा है न सहो किसी कि आर ॥

वर्णन अम्बा का

जब राजा नदी में बह गये तब नदी के किनारे सरवन और नीर रूदन कर रहें थे एक किनारे पर सरवन रों रहें थे दूसरे

किनारे पर नीर इसी बीच में वहां एक धनाढ्य सेठ आ निकला उस सेठ के कोई सन्तान न थी अपना नाम चलाने के लिये सरवन को वह अपने घर को ले गया दूसरे किनारे पर एक रजक (धोवी) आ पहुचा। वह नीर को अपने घर लेगया सरवन नीर की तो यह गति हुई अब राजा की कथा सुनो।

राजा अम्वा नदी में वहते हुए एक किनारे से लग गये और झुण्ड तथा वृक्ष पकड़कर नदी के बाहर निकल आये और शहर को पयान किया उस शहर का एक राजा मर गया था जिस के कोई लड़का न था इस लिये परस्पर मंत्रियों ने यह सम्मति की थी कि सब राजभवन से निकलकर बाहर चलो जो व्यक्ति प्रथम ही सम्मुख आवे उसी को राज्य गद्दी पर बिठा दो ऐसी सम्मति करके राज्य मन्त्री राज्य भवन से चले तब उन के सामने राजा अम्वा ही दृष्टिपड़े मन्त्रियों ने इनके अंग पर राजाओं के चिन्ह देखे तब मन्त्रियों ने अपने मन में अनुमान किया कि अब हमारे सब मनोरथ पूर्ण हो गये, क्योंकि ये भी कोई पूर्व राजा ही हैं मन्त्रियों ने प्रार्थना की कि भगवान आप एक राज्य को स्वीकार कीजिये। क्योंकि आपको यह अनिच्छित प्राप्त हुआ है तब राजा ने उस राज्य को स्वीकार किया और उस राज्य की राजा रक्षा करने लगे पुनः उन के धर्म के तेज का बहुत प्रकाश हुआ क्योंकि यह धर्म रूपी वेल अंत में वहुत फलती फूलती है।

उस नगर के किनारे एक समुन्द्र था और वह नगर उसी समुन्द्र के किनारे आबाद था और दैवयोग से वही सौदागर जोकि रानी आमली को छल कर ले गया था अपने जहाज की

खेप लाया और उसी नगर के निकट समुन्द्र में अपने जहाज को रोक दिया तथा लंगर डालदिये। रानी आमली भी उसी जहाज में थी क्योंकि वह रानी को जहाज में साथ ही रखता था वह इस वात को नही जानता था कि यहां पर इस नगर का कौन राजा है और न वह आमली ही जानती थी कि यहां राजा कौन है वह रात्रि वारह वर्ष के अन्त के दिवस की आने वाली है सौदागर ने रानी आमली की वहुत सेवा की थी और प्रण का पूर्ण होने से भगिनीं भाव रखता था इसी कारण से रानी का भी भाई के समान जानकर सौदागर में अनुराग वढ़ गया था परन्तु वार२ सौदागर यही चिन्तन करता था कि आज की रात्रि वीतकर कल की रात्रि में यह मेरी रानी हो ह। जायेगी किन्तु धर्म पदार्थ धर्मात्माओं की रक्षा किया करता है। इस कारण अव रानी के धर्म की रक्षा होती सो आप सज्जन पुरूषो श्रवण करो (सुनो)।

उस सौदागर ने राजा के यहां एक प्रार्थना पत्र दिया कि मेरे जहाज में वहुत माल है इस लिये दो पहरेदार श्रेष्ठ और शक्ति शाली मुझ को मिलें जिन से जहाजके माल की रक्षा हो सके राजा ने अपने अनुचरों को आज्ञा दी कि दो वहुत वलवान पहरेदार ढूढ़ कर लाओ तव वे नौकर राज्य भवन से चले और शक्तिशाली पहरेदारों की खोज करने लगे खोज करते करते वे उस धनाढ्य सेठ के यहां पहुचे और सरवन को वहुत वलवान पाया उन्होंने सेठ से कहा कि राजाज्ञानुसार अपने वलवान पुत्र को जहाज की रक्षा करने के हेंतु अर्थात पहरा देंने को दे दीजिये तव सेठ ने सरवन को दे दिया।

तत्पश्चात् वे राजा के नौकर लोग उस रजक के घर गये और वहां जाय बलबान देखकर नीर को मांग लिया निदान वे नौकर दोनों को लेकर राज दर्बार में आये।

वे सरवन नीर परस्पर यह नहीं जानते थे कि हम दोनों भाई २ हैं राजा ने उन दोनों को जहाज के पहरे पर खड़ा कर दिया और वे दोनों रात्रि में पहरा देने लगे। वहाँ पर राजा भी आगये परन्तु छिपे हुये बैठे रहे इस लिये कि यह पहरे दार किस प्रकार के हैं और कोई धोखा तो नही करेंगे उन दोनों अज्ञात भाइयों ने रात्रि के तीसरे भाग तक पहरा दिया जब उनको कुछ निद्रा का आवेश हुआ तब छोटा भाई कहने लगा अब निद्रा आती है अतः कोई सुन्दर उदाहरण सुनाओ जिससे निद्रा न आवे और हम ठीक २ पहरा देते रहें सरवन ने अपने मन में विचार किया कि मैं अपना ही जीवन चरित सुनाऊँ।

तब वह उस वृतान्त को जोकि पूर्व हो चुका था सभी सुनाया जब सुनाते २ नदी के किनारे का वर्णन आया तब सरवन कहने लगा उन दोनों भाइयों में से एक तो मैं ही हूँ और दूसरे को मै नही जानता न जाने बह कहां गया इतना सुन नीर के नेत्रों से जल निकलने लगा और सहसा भाई जेट (कौलिया) भर ली तथा गद् २ कण्ठ से कहने लगा कि दूसरा प्रिय भ्रात तुम्हारा मैं ही हूँ जब यह बात रानी ने सुनी तब दोनों पुत्रों के निकट आकर उन्हें छाती से लगा लिया रानी के प्रेम के अश्रुपात होने लगे तदुपरान्त जब राजा नेयह गति देखी तो राजा मन में विचार ने लगे कि अहो यह तो सब मेरा ही कुटुम्ब है और दौड़कर दोनों

पुत्रों तथा रानी से लिपट गये मोह और प्रेम के आंसू बहने लगे और राजा तीनों को राज दंवार में आदर सहित ले गये । जब सब शान्त हो गये तब राजा रानी आमली से पूछने लगे हे प्रिय ! उस पापिन भटियारी को और सौदागर को क्या दण्ड दूँ रानी का सौदागर में भाई के समान प्रेम होगया था इस कारण रानी ने कहा कि सौदागर को कुछ दण्ड नही मिले और भटियारी दुष्टिनी को कुगति से मरवा दिया जाय। तब राजा ने दुर्गति करके भटियारी को मरवा दिया तत्पश्चात् चारौ प्राणी सुख पूर्वक रहने लगे ।

दोहा

धर्म न त्यागा राउने, तब करि धर्म सहाय ।
जिसने धर्म नही किया, उसने जन्म गमाय ६॥

॥ राजा अम्बा आमली आख्यान समाप्त ॥

